Tender Heart High School, Sector - 33-B, Chandigarh.

कक्षा - दसवीं
विषय - हिन्दी साहित्य
शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : एकांकी संचय

पाठ - 3 'मातृभूमि का मान' (एकांकी) लेखक - हरिकृष्ण प्रेमी

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दो :-

4. "मैंने सोचा है दुर्ग के भीतर अपने ही कुछ ---------- मिट्टी में मिला दिया जाएगा। अच्छा अब हम चले।"

प्रश्न (i) वक्ता और श्रोता कौन-कौन हैं? कथन का संदर्भ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - प्रस्तुत कथन का वक्ता मेवाड़ का सेनापति अभयसिंह है और श्रोता मेवाड़ के महाराणा लाखा हैं। अभयसिंह चाहता था कि इस नकली युद्ध में भी वास्तविकता की आवश्यकता है क्योंकि जिस खेल से राणा का वचन पूरा होने वाला है, वह नकली न लगकर असली युद्ध के समान ही दिखाई दे। इसलिए अभयसिंह ने खेल में वास्तविकता लाने के लिए महाराणा को सुझाव दिया कि वे दुर्ग के भीतर अपने सैनिक रख देंगे और वे सैनिक महाराणा पर तथा महाराणा के सैनिकों पर खाली बंदूकों से वार करेंगे। इसके बाद इस मिट्टी के दुर्ग को मिट्टी में ही मिला दिया जाएगा।

प्रश्न (ii) दुर्ग के भीतर अपने कुछ सैनिक रखने के पीछे वक्ता का क्या आशय था और क्यों?

उत्तर - दुर्ग के भीतर अपने कुछ सैनिक रखने के पीछे वक्ता अभयसिंह का यह आशय था कि रण (युद्ध) करने के लिए कोई विपक्षी सैनिक दल का होना आवश्यक है जो हमारी सेना का पथ-रोकने वाला होगा। तभी तो इस नकली युद्ध में कुछ वास्तविकता आ पाएगी। अतः उन्होंने अपनी ही सेना के कुछ वीर सैनिकों को दुर्ग के भीतर भेज दिया तथा राणा पर नकली (छूँछे) वार करने के लिए कहा।

प्रश्न (iii) क्या आप महाराणा द्वारा नकली दुर्ग को ध्वस्त करके अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने को उपयुक्त मानते हैं? कारण लिखिए :-

उत्तर - राजपूत होने के कारण महाराणा लाखा ने प्रतिज्ञा कर ली थी कि सिसोदिया से अपने अपमान का बदला लेने के लिए अविवेकपूर्ण प्रतिज्ञा कर ली थी। लेकिन जब चारणी को मालूम होता है कि राणा ने अपने ही राजपूत भाइयों के खिलाफ़ आक्रमण करने तथा विजय प्राप्त करने की प्रतिज्ञा ले ली है तो वह राणा को ऐसा अनर्थ करने से रोकती है और मेवाड़ में ही नकली बूँदी गढ़ बनाकर उसे ध्वस्त कर प्रतिज्ञा पूरी करने का उपाय बताती है। तब राणा उसकी राय मानकर नकली युद्ध करने को तैयार हो जाते हैं। इसी प्रतिज्ञा को पूरी करने के लिए नकली बूँदी के दुर्ग के भीतर कुछ सैनिक रखे जाते हैं, जो नकली और खाली वार करेंगे किन्तु जब युद्ध आरंभ हुआ तो वीरसिंह ने अपनी मातृभूमि बूँदी का मान बचाए रखने के लिए बड़ी वीरतापूर्ण युद्ध किया और अपने जीते-जी राणा लाखा को दुर्ग पर मेवाड़ की पताका फहराने नहीं दी। इस परिणाम को देखते हुए मैं यही कहूँगा / कहूँगी कि जिस वचन के कारण युद्ध की आग फैले, उस वचन का त्याग कर देना चाहिए।

वचन प्राणियों के कल्याण के लिए लिया जाना चाहिए, युद्ध के लिए नहीं। अतः आवेश में आकर लिए गए ऐसे अविवेकपूर्ण वचन को तोड़ देने में ही भलाई है। मेरी दृष्टि में नकली दुर्ग को ध्वस्त करके अपनी प्रतिज्ञा पूरी करना उपयुक्त नहीं है।

प्रश्न (iv) 'छूँछे वार' का आशय स्पष्ट कीजिए। नकली दुर्ग की रक्षा करने पर हाड़ा सैनिकों के चरित्र की किस विशेषता की ओर संकेत मिलता है?

उत्तर - 'छूँछे वार' से अभयसिंह का आशय है कि नकली बूँदी के दुर्ग के अंदर से हमारे ही सैनिक महाराणा एवं उनके सैनिकों पर 'खाली वार' करेंगे, महाराणा और सैनिकों की हत्या नहीं करेंगे।

किन्तु नकली दुर्ग की रक्षा करते समय भी हाड़ा सैनिक वीर सिंह और उसके साथियों के मन में अपनी मातृभूमि के प्रति सम्मान एवं प्रेम की भावना की ऐसी लहर दौड़ गई कि उन्होंने इस नकली दुर्ग की रक्षा भी असली युद्ध करके की। वीरसिंह ने अपने जीते-जी राणा लाखा को नकली दुर्ग पर भी झंडा नहीं फहराने दिया। वह वीर अपनी मातृभूमि के मान को कायम रखते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ।

कक्षा- दसवीं शिक्षिका- श्रीमती कल्पना शर्मा

विषय- हिन्दी साहित्य (पाठ-3 के प्रश्नोत्तर)

5 "हम लोग महाराणा के नौकर हैं। क्या महाराणा के ---- हमें उनकी इच्छा में व्याघात नहीं पहुँचाना चाहिए।"

प्रश्न (i) वक्ता और श्रोता कौन-कौन हैं? वाक्य का संदर्भ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- प्रस्तुत कथन महाराणा लाखा के एक सैनिक का है। जो वीरसिंह का साथी है और उसी तरह बूँदी का ही रहने वाला है। वह महाराणा लाखा की सेना में एक सैनिक है। उसमें एक ओर अपने स्वामी के प्रति निष्ठा है तो दूसरी ओर अपनी मातृभूमि बूँदी से प्रेम भी है। किन्तु वह राणा लाखा के प्रति वफादारी के भाव से भरा हुआ है इसलिए वह श्रोता वीरसिंह के सामने अपने संशय को व्यक्त करते हुए कहता है कि हम महाराणा के नौकर हैं क्या महाराणा के विरुद्ध तलवार उठाना हमारे लिए उचित है? उसका कहना है कि हमारा शरीर महाराणा के नमक से बना है। इसलिए हमारा कर्त्तव्य है कि हम उनकी इच्छा पूरी करने में किसी प्रकार की रुकावट न डालें। सैनिक के इस कथन से उसकी महाराणा लाखा के प्रति स्वामीभक्ति प्रकट होती है।

प्रश्न (ii) वक्ता महाराणा के विरुद्ध तलवार उठाने को उचित क्यों नहीं मानता? क्या आप उसकी बात से सहमत हैं?

उत्तर- वक्ता महाराणा लाखा का एक सैनिक है। वह है बूँदी का रहने वाला, परन्तु महाराणा लाखा की सेना में एक सैनिक के रूप में नौकरी करता है। वह अपने स्वामी के नमक का मूल्य चुकाना चाहता है, इसलिए नकली बूँदी के किले को बचाने के लिए असली वार नहीं करना चाहता है। वह अपने स्वामी के प्रति स्वामीभक्ति के भाव से भरा हुआ है। इस दृष्टि से हम उसके इस कथन से सहमत हैं।

प्रश्न (iii) वक्ता की बात सुनकर श्रोता ने क्या उत्तर दिया?

उत्तर- इस कथन का श्रोता वीरसिंह है। उसने अपने साथी सैनिक की बात सुनकर कहा – "और जिस मातृभूमि की धूल में हम खेलकर बड़े हुए हैं, उसका अपमान भी कैसे सहन किया जा सकता है? जब कभी मेवाड़ की स्वतन्त्रता पर आक्रमण हुआ है, हमारी तलवार ने उनके नमक का बदला दिया है, लेकिन जब मेवाड़ और बूँदी के मान का प्रश्न आएगा, हम मेवाड़ की दी हुई तलवारें महाराणा के चरणों में चुपचाप रखकर विदा लेंगे और बूँदी की ओर

से प्राणों की बलि देंगे। आज ऐसा अवसर आ पड़ा है।

प्रश्न (iv) आप वक्ता और श्रोता में से किसकी बात को उचित मानते हैं और क्यों ?

उत्तर - (यह प्रश्न व्यक्तिनिष्ठ है। इस गद्यांश के प्रश्न-'ख' और 'ग' के उत्तरों को पढ़कर इस प्रश्न का उत्तर छात्र स्वयं लिखे कि उन्हें वीरसिंह के साथी का उत्तर उचित लगता है या वीरसिंह का ? साथ ही कारण भी बताएँ।)

6. "वीर सिंह की वीरता ने मेरे ----- मेरी आँखों पर से ---- अधीन करने की अभिलाषा करना पागलपन है।"

प्रश्न (i) वीर सिंह ने किस वीरता का परिचय दिया ?

उत्तर - वीर सिंह महाराणा लाखा की सेना में सैनिक हैं। वह हाड़ा वंश का है तथा बूँदी का रहने वाला है। वह अत्यन्त साहसी, दृढ़ निश्चयी, देशभक्त तथा स्वाभिमानी है। जब उसे पता चलता है कि महाराणा लाखा ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए बूँदी का नकली दुर्ग बनवाया है तथा उसे तोड़ने का निश्चय किया है तो उसका स्वाभिमान जाग उठा। उसने कहा, यह नकली दुर्ग भी हमारे वंश के मान का मन्दिर है। हम इसे मिट्टी में नहीं मिलने देंगे। हमें नकली दुर्ग भी अपने प्राणों से अधिक प्रिय है।

उसने बूँदी के नकली दुर्ग की रक्षा करते-करते महाराणा लाखा के सैनिकों को नाकों चने चबवा दिए और अपना बलिदान दे दिया उसकी मृत्यु पर स्वयं राणा लाखा भी आत्म-ग्लानि एवं पश्चाताप से भर गए। इस प्रकार वीर सिंह ने अपनी वीरता का परिचय दिया

प्रश्न (ii) वक्ता और श्रोता कौन-कौन हैं ? श्रोता के चरित्र की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर - प्रस्तुत संवाद के वक्ता महाराणा लाखा हैं और श्रोता चारणी है। चारणी घूम-घूमकर राजपूतों की वीरता के गीत गाती है। उसके गीत राजस्थान के वीरों में वीरता का संचार करने के साथ ही एकता और अखण्डता को बढ़ावा देते हैं। वह मेवाड़ के शासक महाराणा लाखा से निवेदन करती है कि वे बूँदी शासक राव हेमू के द्वारा मिली पराजय को भूल जाएँ और युद्ध का विचार त्याग दें ताकि सभी राजपूत राजाओं की एकता बनी रहे और समय आने पर विदेशी शक्तियों का मुकाबला करके उन्हें खदेड़ा जा सके।

चारणी विवेकपूर्ण, प्रसन्नचित, और दूरदर्शी है। वह राजपूतों की लड़ाई के दूरगामी परिणाम पर विचार करके महाराणा लाखा को युद्ध न करने की सलाह देकर उनके क्रोध को शांत करने की कोशिश भी करती है।

प्रश्न (iii) 'हृदय के द्वार खोलना' और 'आँखों पर से पर्दा हटाना' का प्रयोग किस उद्देश्य से किया गया है ?

उत्तर - वीरसिंह के बलिदान का महाराणा के हृदय पर यह प्रभाव पड़ा कि उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ कि उन्होंने कितनी विवेक-हीन प्रतिज्ञा कर डाली थी। इसलिए उस विजय को वे अपनी विजय भी नहीं स्वीकार कर पा रहे थे। वे चारणी से कहते हैं कि न जाने किस बुरी सायत (मुहूर्त) में मैंने बूँदी को अपने अधीन करने का निश्चय किया था, लेकिन आज इस विजय में मेरी सबसे बड़ी पराजय हुई है। उन्हें अपने इस कृत्य पर बहुत पश्चाताप है। वे कहते हैं कि वीर सिंह ने मेरे हृदय के द्वार खोल दिए हैं अर्थात् सब राजपूत देश, जाति और वंश की रक्षा करने वाले सिपाही हैं, इसलिए हमारी तलवार स्वजनों (अपने ही भाई - बंधुओं पर) पर नहीं उठनी चाहिए। वे यह भी कहते हैं कि वीर सिंह की वीरता ने मेरी आँखों पर पड़ा पर्दा हटा दिया है अर्थात् वीरसिंह ने अपना बलिदान देकर महाराणा लाखा को यह सोचने पर विवश कर दिया कि वीर हाड़ा जीवित रहते किसी की अधीनता स्वीकार नहीं कर सकते थे। अब उन्हें भली- भाँति समझ में आ गया था कि ऐसी वीर जाति को अपने अधीन करने की इच्छा करना ही मूर्खता और पागलपन का चिह्न है, जो कभी पूरा नहीं होने वाला था।

प्रश्न (iv) महाराणा ने अपनी किस अभिलाषा को पागलपन कहा है और क्यों ?

उत्तर महाराणा ने अपनी बूँदी पर विजय प्राप्त करने की अभिलाषा को पागलपन कहा है। उन्होंने सोचा था कि हाड़ाओं पर वे आसानी से विजय प्राप्त कर लेंगे मगर यह उनकी भूल थी। उनकी दृष्टि में ऐसी इच्छा करना ही मूर्खता और पागलपन की निशानी है। उन्हें अब इस बात का भी बहुत अफसोस है कि सिसोदियों और हाड़ाओं में जो दरबार पड़ गई है, संभवत: वह कभी पट नहीं पाएगी।

CamScanner

(ग) "हम युग-युग से एक हैं ------ वीर सिंह के बलिदान ------ करना सिखाया है।"

प्रश्न (i) वक्ता कौन है और वह श्रोता की किस समस्या का समाधान करता है ?

उत्तर वक्ता बूँदी के महाराव हेमू हैं। जब श्रोता महाराणा लाखा हाड़ा सैनिक वीर सिंह की मृत्यु के बाद पछताते हुए कहते हैं कि बूँदी के राव और हाड़ा वंश के राजपूत आज की इस दुर्घटना को नहीं भूल सकते। इस पर वक्ता ने (राव हेमू) कहा कि हम युग-युग से एक हैं और एक रहेंगे।

प्रश्न (ii) वक्ता ने श्रोता को उसकी किस गलती का एहसास करवाया ?

उत्तर- वक्ता राव हेमू ने महाराणा को उनकी गलती का एहसास कराते हुए कहा कि उन्हें याद रखना चाहिए था कि हम राजपूतों में न कोई राजा है और न कोई महाराजा। सब देश, जाति और वंश की रक्षा करने वाले सिपाही हैं, इसलिए हमारी तलवार स्वजनों पर नहीं उठनी चाहिए। बूँदी के हाड़ा सुख-दुःख में चित्तौड़ के सिसोदिया के साथ रहे हैं और भविष्य में भी साथ रहेंगे।

प्रश्न (iii) वक्ता के अनुसार सभी राजपूत किसके पुत्र हैं और उन्हें कैसा व्यवहार करना चाहिए ?

उत्तर - वक्ता राव हेमू के अनुसार सभी राजपूत अग्नि के पुत्र हैं। इसलिए सभी एक हैं। सबके हृदय में अपनी मातृभूमि के मान-सम्मान की रक्षा के लिए आग जल रही है। इसलिए हम एक-दूसरे से अलग नहीं हो सकते।

प्रश्न (iv) 'वीरसिंह के बलिदान ने हमें जन्मभूमि का मान करना सिखाया है।' वक्ता के कथन के आधार पर वक्ता की चरित्रगत विशेषताओं का वर्णन करो।

उत्तर - वक्ता राव हेमू ने अंत में श्रोता राणा लाखा से कहा कि वीर सिंह के बलिदान ने हमें जन्मभूमि का मान करना सिखाया है। इस कथन के द्वारा उनके हृदय की उदारता और देश के लिए मर मिटने की भावना दिखाई देती है। उन्होंने राजपूतों की एकता को बनाए रखने के लिए महाराणा लाखा को क्षमा कर दिया। इसके अलावा वीरसिंह ने अपनी मातृभूमि के लिए अपना बलिदान देकर उनका सिर गर्व से ऊँचा कर दिया था। अंत में समस्त राजपूतों का हृदय एक हो गया। उन्होंने हाड़ा और सिसोदियों को अलग होने से बचा कर एकता और सद्भावना का उदाहरण प्रस्तुत किया।